*35*

# आत्मा का वास

## *( 8:9, 11 )*

रोमियों 8:9, 11 में तीन बार मसीही लोगों में पवित्र आत्मा के वास की बात मिलती है:

> ... परमेश्वर का आत्मा तुम में *बसता है*, ... तुम शारीरिक दशा में नहीं, परन्तु आत्मिक दशा में हो (आयत 9क)।

> ... यदि उसी का आत्मा जिसने यीशु को मरे हुओं में से जिलाया, तुम में बसा हुआ है; तो जिस ने मसीह को मरे हुओं में से जिलाया, वह तुम्हारी मरनहार देहों को भी अपने आत्मा के द्वारा, जो तुम में बसा हुआ है जिलाएगा (आयत 11)।

आत्मा का वास वह आशीष है, जो मसीही लोगों को मिलती है, पर गैर मसीही लोगों को नहीं। परन्तु यह क्या है? पवित्र आत्मा का परमेश्वर की सन्तान से यह कैसा विशेष सम्बन्ध है? पवित्र आत्मा और मसीही व्यक्ति के विशेष सम्बन्ध के बारे में पूछे गए हर सवाल का जवाब तो हम नहीं दे सकते, पर इस विषय पर नया नियम जो कुछ कहता है, उसकी समीक्षा करना उपयोगी है।

### पवित्र आत्मा का दिया जाना

यूहन्ना 7:38 में यीशु ने घोषणा की कि "जो मुझ पर विश्वास करेगा, जैसा पवित्र शास्त्र में आया है उसके हृदय में से जीवन के जल की नदियां बह निकलेंगी [यशायाह 44:3]।" फिर यूहन्ना ने कहा, "उस ने यह वचन उस आत्मा के विषय में कहा, जिसे उस पर विश्वास करने वाले पाने पर थे; क्योंकि आत्मा अब तक न उतरा था; क्योंकि यीशु अब तक अपनी महिमा को न पहुंचा था" (आयत 39)। यूहन्ना की टिप्पणियां हमें बताती हैं कि पवित्र आत्मा भविष्य में यीशु के "महिमा पाने" (मृत्यु, गाड़े जाने, जी उठने और ऊपर उठाए जाने) के बाद विश्वासियों को दिया जाना था। यूहन्ना की टिप्पणियों से हम यह निष्कर्ष निकालते हैं कि पवित्र आत्मा का यह दिया जाना एक *नये* प्रकार का दिया जाना था, जिसका सम्बन्ध पुराने नियमों के समय से नहीं था, परन्तु मसीही युग में इसे अलग नहीं किया जा सकता।

अपनी मृत्यु से कुछ घण्टे पहले यीशु ने प्रेरितों से यह प्रतिज्ञा की थी कि वह पृथ्वी पर से चले जाने के बाद उनके लिए पवित्र आत्मा भेजेगा (यूहन्ना 14:16, 17, 25, 26; 15:26, 27; 16:7-14)। आत्मा के बारे में जो कुछ यीशु ने कहा, उसमें से अधिकतर बारह लोगों पर विशेष रूप से सीधे लागू होता था (देखें 14:26; 16:13), परन्तु मसीही युग में आत्मा की चलती रहने वाली सेवकाई के संकेत हैं। उदाहरण के लिए यूहन्ना 14:16 में यीशु ने कहा, "और मैं पिता से

विनती करूंगा, और वह तुम्हें एक और[1] सहायक देगा, कि वह *सर्वदा* तुम्हारे साथ रहे।'' ''सहायक'' *para* (''के साथ'') और *kaleo* (''बुलाना'') से लिए गए मिश्रित शब्द *parakletos* का अनुवाद है। इस प्रकार पवित्र आत्मा को कई बार ''The Paraklete'' कहा जाता है। इस शब्द का अर्थ प्रोत्साहित करने, सामर्थ देने और सांत्वना देने के लिए ''साथ बुलाया गया'' किया जाता है। AB में ''शान्ति देने वाला (सलाहकार, सहायक, विनती करने वाला, एडवोकेट, शक्ति देने वाला और पास खड़ा)'' है।

ऊपर उठाए जाने के बाद यीशु ने पिन्तेकुस्त नामक यहूदियों के पर्व पर प्रेरितों पर पवित्र आत्मा बहा दिया (देखें प्रेरितों 1:9; 2:1-4, 33)। प्रेरितों को वह मिला, जिसे पुराने टीकाओं में ''आत्मा का असामान्य दान'' कहा गया है, जिसमें आश्चर्यकर्म करने की योग्यता भी शामिल थी (देखें प्रेरितों 2:4; 3:1-8; 5:12)। फिर अपना प्रवचन समाप्त करने के निकट पतरस ने अपने सुनने वालों को वह पेशकश की, जिसे टीकाओं में ''आत्मा का साधारण दान'' कहा गया है। इस प्रेरित ने विश्वास करने वालों से कहा, ''मन फिराओ और तुम में से हर एक अपने-अपने पापों की क्षमा के लिए यीशु मसीह के नाम से बपतिस्मा ले; *तो तुम पवित्र आत्मा का दान पाओगे*'' (प्रेरितों 2:38)।

''पवित्र आत्मा का दान'' वाक्यांश के कई अर्थ हो सकते हैं; परन्तु अधिकतर लोग इस बात पर सहमत हैं कि प्रेरितों 2:38 में यह स्वयं पवित्र आत्मा के दान के लिए कहा गया है।[2] प्रेरितों 5:32 में पतरस ने ''पवित्र आत्मा, जिसे परमेश्वर ने उन्हें दिया है, जो उसकी आज्ञा मानते हैं'' की बात की। 1 थिस्सलुनीकियों 4:8 में पौलुस ने ''परमेश्वर जो अपना पवित्र आत्मा तुम्हें देता है'' के बारे में कहा।

प्रेरितों 2:38 में आत्मा की प्रतिज्ञा की दो सच्चाइयों पर ध्यान दें। पहली, पवित्र आत्मा लोगों को पानी का बपतिस्मा लिए जाने पर दिया जाता है। दूसरा आत्मा के दान की प्रतिज्ञा वचन के अनुसार बपतिस्मा लेने वाले *हर व्यक्ति* से की गई है। अन्य शब्दों में हर व्यक्ति जो मसीही है, उसे ''पवित्र आत्मा का दान'' मिला है। इससे हमें पता चलता है कि आत्मा का उद्देश्य इसके पाने वालों को आश्चर्यकर्म करने की योग्यताएं देना नहीं था। जहां तक मुझे मालूम है कि कोई इस बात का दावा नहीं करता कि नये नियम के समय में *हर* मसीही आश्चर्यकर्म करता था, परन्तु प्रेरितों 2:38 में दिया गया है कि ''पवित्र आत्मा का दान'' *हर* मसीही को मिला था।

इस अध्ययन में हमारा उद्देश्य पहली सदी में आश्चर्यकर्मों पर चर्चा करना नहीं है। इतना कहना ही काफी है कि ''आत्मा का असामान्य दान'' कलीसिया के आरम्भिक दिनों के लिए ही था, जबकि ''सामान्य दान'' सदा के लिए यानी जब तक प्रभु नहीं आता तब तक के लिए।

किसी को कैसे *पता* चलेगा कि उसे ''पवित्र आत्मा का दान'' मिला है? यह अहसास होने से नहीं कि ''पहले से अच्छा लग रहा है,'' बल्कि *बाइबल के कहने* से कि परमेश्वर आत्मा देता है, जब हम वचन के अनुसार बपतिस्मा लेते हैं। मसीही व्यक्ति को मालूम है कि उसे ''पवित्र आत्मा का दान'' वैसे ही मिला है, जैसे उसे पता है कि प्रेरितों 2:38 में परमेश्वर की प्रतिज्ञा के कारण ''[उसे] पापों की क्षमा'' मिली है, क्योंकि परमेश्वर अपनी प्रतिज्ञा पूरी करता है (देखें रोमियों 4:21; 1 कुरिन्थियों 1:9; तीतुस 1:2)। प्रेरितों 2:38 में प्रभु की प्रतिज्ञाओं को जानते और मानते हुए हमें *अच्छा लगना* चाहिए; परन्तु अच्छा लगना प्रमाण न होकर परिणाम है। बाइबल की

गवाही निर्विवाद रूप से इस बात का सबूत है कि हमें दान के रूप में पवित्र आत्मा मिला है।

पवित्र आत्मा के बारे में कइयों के विचार अलग ही होते हैं। उन्हें बताया जा सकता है कि परमेश्वर उनके जीवनों में काम कर रहा है और खामोश रहता है। परन्तु जब उन्हें लगता है कि उन्हें ''पवित्र आत्ज़ा मिला'' है तो वे सनकियों वाला व्यवहार करने लगते हैं। मैंने पहले ध्यान दिलाया था कि पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा एक हैं; जब एक के कुछ करने की बात की जाती है तो तीनों के करने की बात की जा सकती है। इसलिए प्रेरितों 2:38 पर चर्चा करते हुए मैं आमतौर पर कहता हूं, ''जब आपने बपतिस्मा लिया था तो परमेश्वर ने आपकी सहायता के लिए आपको *अपना आत्मा* दिया था।'' ''पवित्र आत्मा का दान'' वाज्यांश को तान्त्रिक अर्थ के रूप में न देखें, बल्कि दान को परमेश्वर के *आपके साथ विशेष और निजी सज़्बन्ध* आरज़्भ करने के रूप में देखें, जो बपतिस्मा लेने से पहले आपका नहीं था।

## मुहर और बयाना

परमेश्वर ने हमें यह विशेष दान ज़्यों दिया? आत्मा के दान का एक उद्देश्य हमारे उद्धार की ''मुहर'' और हमारी अनन्त मीरास के ''बयाने'' का काम करना है। उदाहरण के लिए 2 कुरिन्थियों 1:21, 22 में पौलुस ने कहा, ''और जो हमें तुज़्हारे साथ मसीह में दृढ़ करता है, और जिसने हमें अभिषेक किया, वही परमेश्वर है। जिस ने हम पर छाप भी कर दी है और *बयाने* में आत्मा को हमारे मनों में दिया।'' इफिसियों 1:13, 14 में हम पढ़ते हैं, ''उसी [मसीह] में ... तुम ने विश्वास किया, प्रतिज्ञा किए हुए पवित्र आत्मा की *छाप* लगी। वह उसके मोल लिए हुओं के छुटकारे के लिए हमारी मीरास का *बयाना* है, ...।''

बाइबल के समय में छाप या मुहर के कई उद्देश्य होते थे: यह स्वामित्व का संकेत थी, प्रमाणिकता की गारण्टी और इससे सुरक्षा मिलती थी। आत्मा की ''मुहर'' होना इन सभी उद्देश्यों को मिला देता है: यह हमारा प्रभु के लोगों के रूप में परिचय कराता (देखें 1 कुरिन्थियों 6:19ख, 20क), यह प्रचार करता है कि हम सचमुच में मसीही हैं,[3] और हमें परमेश्वर की सुरक्षा का आश्वासन देता है (देखें रोमियों 8:26-28, 37)। रोमियों 8:9 में पौलुस ने ईश्वरीय स्वामित्व के पहलू को उजागर किया। उसने कहा कि ''जिसमें मसीह की आत्मा नहीं है, वह मसीह का नहीं है।'' गलातियों 4:6 में उसने प्रमाणिकता की बात पर ज़ोर दिया। उस आयत में पौलुस ने कहा, ''और तुम जो पुत्र हो, इसलिए परमेवर ने अपने पुत्र के आत्मा को, जो हे अज़्बा, हे पिता कहकर पुकारता है, हमारे हृदय में भेजा है।'' (ध्यान दें कि परमेश्वर ने हमें पुत्र *बनाने* के लिए हमारे मनों में आत्मा नहीं भेजा, बल्कि इसलिए भेजा कि हम *पुत्र* हैं।)

पवित्र आत्मा के दान को ''बयाना'' भी कहा गया है। पहले दी गई आयतों के अलावा 2 कुरिन्थियों 5:5 कहता है, ''वह परमेश्वर है, जिसने हमें बयाने में आत्मा भी दिया है।'' ''बयाना'' *arrabon* से लिया गया है, जिसका अर्थ ''खरीदार द्वारा जमा की गई राशि, जो खरीद पूरी न होने पर रद्द हो जाती है'' बताया जाता है।[4] NASB वाली मेरी बाइबल में इसके लिए ''pledge'' देकर टिप्पणी दी गई है, ''Or *down payment*'' है। *Arrabon* के विचार को व्यज़्त करने वाले और शज़्द ''जमा'' और ''गारण्टी'' हैं।[5]

आत्मा का दान *किस पर* ''जमा'' है? यह किस बात की ''गारण्टी'' है। इफिसियों 1:13,

14 में "प्रतिज्ञा किए हुए पवित्र आत्मा की छाप" की बात है "वह उसके मोल लिए हुओं के *छुटकारे* के लिए हमारी *मीरास* का बयाना" के रूप में दिखाया गया है। बाद में इफिसियों 4:30 में पौलुस ने "परमेश्वर के पवित्र आत्मा" की बात की "जिस से तुम पर छुटकारे के दिन के लिए छाप दी गई है" की बात करते हुए "मुहर" शज़्द का इस्तेमाल करके इसी बात पर ज़ोर दिया। पवित्र आत्ज़ा का दान स्वर्ग में "जमा" अर्थात हमारे अनन्त प्रतिफल की ईश्वरीय "गारण्टी" है।

*Arrabon* शज़्द का एक और पहलू ध्यान देने योग्य है। बाइबल के समय में जब दो जन भूमि खरीदने पर सहमत होते थे तो बेचने वाला कई बार भूमि का कुछ खण्ड छोड़ देता था और उसे अच्छे विश्वास के *arrabon* के रूप में खरीदार को दे देता था। जब कोई मकान बिक रहा होता तो बेचने वाला समझौते की मुहर के लिए *arrabon* के रूप में छत के छप्पर से कुछ रख सकता था। कई लेखक सुझाव देते हैं कि हम स्वर्ग की पवित्र आत्मा के दान की "गारण्टी" पर विचार ही कर सकते हैं, परन्तु हमें आने वाली आशिषों के पूर्व स्वाद अर्थात स्वर्ग के "भाग" के रूप में इस दान पर भी विचार करना चाहिए।

## आत्मा का वास

2 कुरिन्थियों 1 में पवित्र आत्मा के दान की बात करते हुए पौलुस ने कहा कि परमेश्वर ने "बयाने में आत्मा को *हमारे मनों में* दिया" (आयत 22)। रोमियों 5 में उसने कहा कि "पवित्र आत्मा, जो हमें दिया गया है, के द्वारा परमेश्वर का प्रेम *हमारे मन में* डाला गया है" (आयत 5)। "हमारे मनों में" पवित्र आत्मा की अवधारणा को व्यज़्त करने के लिए पौलुस ने कहा कि पवित्र आत्मा हममें *वास करता* है। जैसा कि पहले ध्यान दिया गया है, ऐसी शज़्दावली का इस्तेमाल रोमियों 8:9, 11 में तीन बार हुआ है। पौलुस ने अन्य पत्रों में भी इस अभिव्यज़्ति का इस्तेमाल किया। उदाहरण के लिए 1 कुरिन्थियों 3:16 में उसने कहा "ज़्या तुम नहीं जानते कि तुम परमेश्वर का मन्दिर हो, और परमेश्वर का आत्मा तुम में *वास करता* है?" (देखें 1 कुरिन्थियों 6:19; इफिसियों 2:22)। तीमुथियुस के नाम अपने दूसरे पत्र में उसने फिर से "पवित्र आत्मा के द्वारा जो हम में *बसा* हुआ है" (2 तीमुथियुस 1:14) की बात की। यूनानी शज़्द (*oikeo*) से अनुवादित शज़्द "बसा हुआ" का अर्थ "किसी के वास में रहना" है। यह संकेत देता है कि "बसने वाला" अब "वास" पर नियन्त्रण रखता है।

यदि हम इस तथ्य को स्वीकार कर लें कि आत्मा हमारे अन्दर बसता है तो इससे हमारे जीवनों में परिवर्तन आना चाहिए (देखें 1 कुरिन्थियों 3:16, 17; 6:19, 20)। यदि आपको पता चले कि परमेश्वर या मसीह आपके घर में रहने के लिए आ रहे हैं तो आप ज़्या करेंगे। आप सज़्भवतया जल्दी से घर जाकर उसकी साफ-सफाई करेंगे और उसमें कोई कसर नहीं रहने देंगे। कइयों के लिए "घर साफ करने" का विचार कूड़ा इकट्ठा करके उसे कोने में या पलंग के नीचे कर देना होता है। परन्तु यदि *परमेश्वर* उनके साथ रहने आ रहा हो तो वे *हर* कोने की सफाई करेंगे। हम पवित्र आत्मा के रहने का स्थान हैं। उसे *पवित्र* आत्मा इसलिए कहा गया है ज़्योंकि वह पवित्र *है*। उसके हमारे अन्दर रहने के लिए हमें अपने जीवन पवित्र रखने होंगे! इस सच्चाई की पुष्टि रोमियों 8 के शज़्द लिखते समय पौलुस के उद्देश्यों का एक भाग थी: पवित्र आत्मा तुममें रह रहा है, इसलिए तुम इसकी तरह *काम* करो (देखें रोमियों 8:13ख)!

जो सवाल कइयों को परेशान करता है कि पवित्र आत्मा हमारे अन्दर *कैसे* या किस अर्थ में रहता है। पौलुस ने वास के "कैसे" का उज़र देने की कोशिश नहीं की। उसने केवल इतना कहा कि आत्मा हममें वास करता है और इससे कम से कम दो तरह से हमारे जीवन प्रभावित होने चाहिए: इससे हम में आत्मविश्वास भरना चाहिए और हमें परमेश्वर के लिए जीने को दृढ़ संकल्प होना चाहिए।

याद रखें कि परमेश्वरत्व का एक व्यज़्ति जो कुछ करता है, दूसरों के भी वही करने की बात कही जा सकती है। इसलिए यह पढ़कर कि पिता और पुत्र हम में वास करते हैं, हमें आश्चर्य नहीं होता। 1 यूहन्ना 4:15 में हम पढ़ते हैं, "जो कोई यह मान लेता है कि यीशु परमेश्वर का पुत्र है; परमेश्वर उसमें बना रहता है, और वह परमेश्वर में।" गलातियों 2:20 में पौलुस ने कहा, "अब मैं जीवित न रहा, पर मसीह मुझ में जीवित है।"

जिन आयतों में उसने परमेश्वर या मसीह के हमारे अन्दर रहने की बात की, उनमें यह ध्यान देने वाली बात है कि पिता या पुत्र के वास करने/रहने की बात आत्मा के सज़्बन्ध में कितनी बार की गई है। उदाहरण के लिए आत्मा भेजने की यीशु की प्रतिज्ञा के संदर्भ (आयतें 16, 17, 26) में यूहन्ना 14:23 कहता है कि परमेश्वर और मसीह अपना बसेरा उन लोगों के साथ बनाते हैं, जो मसीह के वचन को मानते हैं। इफिसियों 3 में पौलुस ने प्रार्थना की कि परमेश्वर उसके पाठकों को "आत्मा के भीतरी मनुष्यत्व में सामर्थ" दे जिससे वे "बलवन्त हों और विश्वास के द्वारा मसीह तुज़्हारे हृदय में बसे" (आयतें 16, 17)। यूहन्ना ने लिखा, "जो उसकी आज्ञाओं को मानता है, वह इसमें; और यह उसमें बना रहता है: और इसी से, अर्थात उस आत्मा से, जो उसने हमें दिया है, हम जानते हैं, कि वह हम में बना रहता है" (1 यूहन्ना 3:24)। इसी पत्र में थोड़ा आगे उसने कहा, "परमेश्वर हममें बना रहता है; और उसका प्रेम हम में सिद्ध हो गया है। इसी से हम जानते हैं, कि हम उसमें बने रहते हैं, और वह हम में; ज़्योंकि उसने अपने आत्मा में से हमें दिया है" (4:12, 13)।

शायद इन जैसी आयतें ही हैं जिनसे कई लोगों ने यह निष्कर्ष निकाला कि परमेश्वर और मसीह हम में प्रतिनिधि के रूप में वास करते हैं जबकि पवित्र आत्मा व्यज़्तिगत रूप में हम में वास करता है।[6] कालांतर में मसीही लेज़कों के लिए पुराने नियमों के समयों को "पिता का युग," पृथ्वी पर मसीह के रहने को "पुत्र का युग" और मसीही युग को "पवित्र आत्मा का युग" कहना आम बात थी।[7]

## वास किए हुए आत्मा द्वारा मसीही लोगों की सहायता के ढंग

आत्मा के वास के मसीही लोगों के लिए कुछ करने के लिए मुज़्य वचन रोमियों 8 है। आत्मा के "ऊपर को खींचने" (देखें आयत 2); हमारे शारीरिक पुनरुत्थान में आत्मा की भूमिका (आयत 11); और इस तथ्य पर कि आत्मा के द्वारा हम शरीर के कामों को मार सकते हैं (आयत 13) हम पहले चर्चा कर चुके हैं। आगामी पाठों में हम पवित्र आत्मा की अगुआई में चलना (आयत 14) हमारी आत्माओं के साथ आत्मा की गवाही देना (आयत 16) और हमारी निर्बलता में आत्मा का सहायता करना (आयत 26) के विषय में सीखेंगे। एक बार फिर इस पर विवाद है कि आत्मा ये बातें *कैसे* करता है और एक बार फिर पौलुस ने "कैसे" का उज़र देने की कोई

कोशिश नहीं की। उसने केवल इतना बताया कि आत्मा ज़्या करता है और एक अर्थ में हमें विश्वास से इसे मान लेने को कहा।

सब इस बात से सहमत हैं कि पवित्र आत्मा का हमारी सहायता करने का एक ढंग अपनी प्रेरणा से दिए वचन के द्वारा है। इफिसियों 6:17 में वचन को "आत्ज़ा की तलवार" कहा गया है। हम में आत्मा की सेवकाई के इस पहलू को कम करने का साहस नहीं है। वचन हमारे अन्दर विश्वास लाता (रोमियों 10:17), हमें शुद्ध करता (यूहन्ना 15:3; देखें प्रेरितों 15:9), हमें पवित्र करता (यूहन्ना 17:17, 19), हम में काम करता (1 थिस्सलुनीकियों 2:13) और हमें बचाता है (याकूब 1:21; देखें 1 पतरस 1:22, 23)। पौलुस ने हमें अपने जीवनों में "आत्मा का फल" लाने की चुनौती दी (गलातियों 5:22, 23), परन्तु बिना बीज के तो फल हो नहीं सकता, और "बीज तो परमेश्वर का वचन है" (लूका 8:11)।

कई लोग आत्मा की सेवकाई को वचन तक सीमित कर देते हैं, परन्तु यह सीमा लगाना चरम लगता है। पहले हमने ध्यान दिया था कि आत्मा का दान मसीही युग की पहचान है और यह वह दान है, जो गैर-मसीही लोगों के पास नहीं है। परन्तु पुराने नियम के लोगों के पास नबियों के द्वारा दिया गया वचन था और गैर-मसीही लोगों को भी वचन की प्रति मिल सकती है। शायद इससे हमें अपने आप को यह याद दिलाने में सहायता मिले कि हम *परमेश्वर के* आत्मा की बात कर रहे हैं। ज़्या परमेश्वर ने हमें अपना वचन दिया और फिर छोड़ दिया है। ज़्या वह अपने लोगों के जीवनों में काम नहीं करता है? ज़्या प्रार्थना का कोई उद्देश्य और सामर्थ नहीं है (याकूब 5:16)?

रोमियों 8:28 घोषणा करता है कि परमेश्वर हमारे जीवनों में उपाय करने के लिए काम करता है।[8] याद रखें कि जो कुछ परमेश्वर के एक सदस्य के करने के लिए कहा जाता है, वही दूसरों के लिए कहा गया हो सकता है। रोमियों 8:28 का संदर्भ मसीही व्यज़्ति के जीवन में आत्मा का काम करता है (देखें आयतें 26, 27)। इस कारण हम निष्कर्ष निकालते हैं कि परमेश्वर घटनाओं को इस प्रकार से तरतीब देकर कि "सब वस्तुएं ... मिल हमारी भलाई करें" हमारे जीवनों में उपाय करने के द्वारा काम करता है।

वास करने के द्वारा पवित्र आत्मा हमारे लिए कुछ और भी करता है? बाद में रोमियों की पुस्तक में हमें यह वचन मिलता है: "सो परमेश्वर जो आशा का दाता है तुज़्हें विश्वास करने में सब प्रकार के आनन्द और शान्ति से परिपूर्ण करे, कि *पवित्र आत्मा की सामर्थ* से तुज़्हारी आशा बढ़ती जाए" (15:13)। पहले मैंने इफिसियों के लिए पौलुस की बात दोहराई थी: "वह [परमेश्वर] अपनी महिमा के धन के अनुसार तुज़्हें यह दान दे, कि *तुम उसके आत्मा के अपने भीतरी मनुष्यत्व में सामर्थ पाकर बलवन्त होते जाओ*" (इफिसियों 3:16)। उस प्रार्थना के बाद एक आशीष वचन मिलता है: "अब जो ऐसा सामर्थी है, कि हमारी विनती और समझ से कहीं अधिक काम कर सकता है, उस सामर्थ के अनुसार जो हम में कार्य करता है, कलीसिया में, और मसीह यीशु में, उस की महिमा पीढ़ी से पीढ़ी तक युगानुयुग होती रहे। आमीन" (इफिसियों 3:20, 21)। एक बार फिर पौलुस ने तथ्य बताए और उनके "कैसे" का कोई प्रयास नहीं किया।

## परमेश्वर के उपाय को अपनाना

हमें पूरी समझ आए या न, नया नियम सिखाता है कि परमेश्वर ने अपने आत्मा के द्वारा

मसीही लोगों को अद्‌भुत संसाधन दिए हैं। अफसोस की बात है कि संसाधनों के होने का अर्थ यह नहीं है कि उनका उपयोग हो जाएगा। मैंने एक आदमी के बारे में पढ़ा, जो समुद्र में डूब गया था, उसके पास एक लाइफलाइन फैंकी गई, परन्तु उसने उसे पकड़ने से इनकार कर दिया, जिस कारण वह डूब गया। मैंने एक और आदमी के बारे में पढ़ा, जो कर्ज़ नहीं लौटा पाया और बैंक ने उसका घर वापस ले लिया। जीवन का शेष भाग वह बेघर आवारा गलियों में घूमता रहा। उसके मरने के बाद पता चला कि एक बैंक के खाते में उसके 1,00,000 डॉलर जमा हैं। उसके पास संसाधन थे, परन्तु किसी कारण उसने उनका इस्तेमाल न करने का फैसला किया। परमेश्वर ने मसीही जीवन जीने के लिए आवश्यक संसाधन उपलज़्ध करवा दिए हैं, परन्तु उनका लाभ उठाना हमारे हाथ में है।

हम परमेश्वर के उपाय को *कैसे* अपना सकते हैं? इस पर चर्चा हम आत्मा के हमारी सहायता करने के ढंगों का अध्ययन करते हुए आगामी पाठों में करेंगे (रोमियों 8:14, 16, 26), परन्तु यहां कुछ टिप्पणियां देना अच्छा है। बपतिस्मा लेने के समय पवित्र आत्मा हमारे साथ अपना वास (हमारे अन्दर वास) करता है (देखें 2:38; रोमियों 8:11)। हम में से ही किसी को निर्णय लेना है कि आत्मा का स्वागत करना है या अवांछित आगंतुक के रूप में उसे नज़रअंदाज़ करना है।

1 थिस्सलुनीकियों 5:19 में पौलुस ने लिखा, "आत्मा को न बुझाओ।"[9] आग बुझाने के लिए उस पर डाले गए पानी का रूपक है। अलंकार पहली सदी के पाठकों से ज़बर्दस्त ढंग से बात करता है। गरमाइश और खाना पकाने के लिए आग की आवश्यकता थी। उजाला केवल इसी से हो सकता था। यदि आग को बुझा दिया जाता तो उन्हें ठण्ड लग जाती, भूखे और अन्धकार में रहते। आत्मा को कई तरह से "बुझाया" जा सकता है। मैं कुछ स्पष्ट ढंगों के बारे में बताता हूं:

- *अज्ञानता*–यानी परमेश्वर के वचन की अज्ञानता के द्वारा। पवित्र आत्मा जो कुछ चाहता है कि हम करें से जानने का एकमात्र *वास्तविक* ढंग बाइबल को पढ़ना और इसका अध्ययन करना है, जिसे लिखने की प्रेरणा उसने दी।
- *अविश्वास के द्वारा*–कइयों को मालूम है कि बाइबल ज़्या करती है, परन्तु वे यह विश्वास नहीं करते कि इसकी प्रेरणा वास्तव में परमेश्वर के आत्मा के द्वारा दी गई थी।
- *उदासीनता के द्वारा*–कई लोग बाइबल की शिक्षा से अवगत हैं। परन्तु वे वचन के नियम को मानने में कोई दिलचस्पी नहीं लेते।
- *अवज्ञा के द्वारा*–कई लोग वचन में दिए गए आत्मा के निर्देशों की ओर थोड़ा या बिल्कुल ध्यान नहीं देते। वे अपने ही तरीके से चलते रहने पर ज़ोर देते हैं। रोमियों की भाषा में कहें तो वे आत्मा के अनुसार नहीं, शरीर के अनुसार चल रहे थे।

न केवल हम आत्मा को "बुझा" सकते हैं बल्कि हम उसे "शोकित" भी कर सकते हैं। पौलुस ने इफिसुस के लोगों से कहा कि "और परमेश्वर के पवित्र आत्मा को शोकित मत करो, जिस से तुम पर छुटकारे के दिन के लिए छाप दी गई है" (इफिसियों 4:30)। ज़्या आपके किसी प्रेम करने वाले ने आपको शोकित किया है, किसी ऐसे व्यज़्ति ने जिसकी आप सहायता करना चाहते हों, परन्तु उसने आपकी सहायता और सलाह को ठुकरा दिया? तो फिर आप समझते हैं कि

जब परमेश्वर की सन्तान वचन को नज़रअंदाज करके उसकी सहायता लेने से इनकार कर देते हैं तो आत्मा को कैसा लगता है। बीते जमाने के एक प्रसिद्ध प्रचारक ने एक बार कहा था कि न्याय के दिन यह पता चलने पर कि हमने परमेश्वर के आत्मा को कितनी तरह से शोकित किया था, हम सभी चकित होंगे।

आत्मा को बुझाने और शोकित करने के अलावा हम उसका "अपमान" कर सकते हैं। इब्रानियों की पुस्तक के लेखक ने कहा कि "जान-बूझकर पाप करते" रहने वाले मसीही (10:26) लोगों ने "अनुग्रह के आत्मा का अपमान किया" है (आयत 29)। मुझे अपमान अच्छा नहीं लगता, आप को लगता है? पवित्र आत्मा को भी नहीं लगता। परन्तु जब हम उसके विपरीत जीने पर ज़ोर देते हैं जो परमेश्वर हमसे उज़्मीद करता है तो हम उसका अपमान ही करते हैं।

आइए अब सकारात्मक की ओर मुड़ते हैं कि स्वागतयोग्य अतिथि के रूप में पवित्र आत्मा से व्यवहार और उसके द्वारा हमारी सहायता कैसे की जा सकती है। इफिसियों 5:18 में पौलुस ने कहा, "और दाखरस से मतवाले न बनो, ज़्योंकि इस से लुचपन होता है, पर आत्मा से परिपूर्ण होते जाओ।" इस आयत में कई विषमताएं स्पष्ट हैं। अल्कोहल से भरे होने के बजाय हमें परमेश्वर के आत्मा से भरे होना चाहिए। अल्कोहल को अपने ऊपर नियन्त्रण देने के बजाय हमें आत्मा को नियन्त्रण देना चाहिए। अल्कोहल पर निर्भर होने के बजाय हमें परमेश्वर के आत्मा पर निर्भर होना चाहिए। "आत्मा से परिपूर्ण" शज़्दों पर विचार करते हुए मुझे लगता है जैसे पौलुस शज़्दों का खेल खेल सकता था।

आत्मा के लिए (*pneuma*) शज़्द का इस्तेमाल "वायु" के लिए भी किया जाता है। पौलुस के पाठक पानी में चलने वाले जहाज़ों से परिचित थे, जो हवा के रुख से चलते थे। जहाज़ के लिए हवा से आगे की ओर बढ़ने के लिए, इसके पालों को सही दिशा में *लगाना* आवश्यक था। जब उन्हें सही ढंग से लगाया जाता तो वे हवा से *भर* जाते जिससे जहाज़ आगे को बढ़ सकता। रोमियों 8 में पौलुस ने ज़ोर दिया कि हमारे मन आत्मा की बातों पर *लगे* होने आवश्यक हैं (आयतें 5, 6)। जब हमारे मन इस प्रकार लगे हों तो पवित्र आत्मा हमारे जीवनों को वैसे ही भर सकता है, जैसे सही ढंग से लगे पालों में हवा भरती है। मैं जितना आसान ढंग से बता सकता हूं, उसे बताता हूं कि यदि मैं अपने जीवन को आत्मा से भरना चाहता और एक मसीही के रूप में कुछ करने के लिए उसकी सहायता लेना चाहता हूं तो मुझ में *मन की स्थिति* (मनोस्थिति) होनी आवश्यक है, जो सब बातों से बढ़कर परमेश्वर की इच्छा को करने की इच्छुक हो।

ज़्या आप आत्मा के वास और आपके जीवन को आशीष देने की हर बात को समझते हैं? हम परमेश्वर का धन्यवाद कर सकते हैं कि इस प्रश्न का उज़र नहीं में हैं, ज़्योंकि कोई भी व्यज़्ति आत्मा को पूरी तरह से समझने का दावा नहीं कर सकता। जो आवश्यक है, वह यह समझना है कि उसकी सहायता को *अपनाना* कैसे है। जब मैं छोटा था तो कई बार मैं बगीचे में पौधे लगाता था। मुझे यह समझ नहीं थी कि बीज अंकुरित होकर बढ़ते हैं; परन्तु मुझे इतना अवश्य पता था कि उन्हें ज़ूमि में लगाना, पानी देना, खाद डालना और फिर गुड़ाई करना आवश्यक है। बाकी मैं परमेश्वर पर छोड़ देता था और वह अच्छी फसल देता था। इसी प्रकार मुझे पूरी तरह से यह समझ नहीं है कि आत्मा मुझ में कैसे वास करता और मुझे कैसे आशीष देता है। मुझे इतना मालूम है कि परमेश्वर मेरा जीवन कैसा चाहता है। मैं वैसे बनने की कोशिश करता हूं और बाकी मैं परमेश्वर

पर छोड़ देता हूं। मसीह जीवन के लगभग साठ साल बाद, मैं यह गवाही दे सकता हूं कि परमेश्वर ने मुझे कज़ी निराश नहीं होने दिया। पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा ने मेरे जीवन को इतनी आशिषों से भर दिया है कि उनको गिना नहीं जा सकता।

## सारांश

पहले मैं ने पूछा था कि हमें कैसे पता चल सकता है कि आत्ज़ा हम में वास करता है और मैंने उज़र दिया था कि हमें इसका इसलिए पता चल सकता है ज़्योंकि बाइबल यह सिखाती है और हम विश्वास से इसे मानते हैं। जे. डज़्ल्यू मैज़गर्वे ने इस विषय में एक अतिरिज़्त टिप्पणी की है:

> ... वास्तविक और प्रभावकारी होने के बावजूद पवित्र आत्मा की सहायता इसकी सहायता पाने वाले के लिए इतनी बाधक नहीं है कि ... [अपनी इन्द्रियों के द्वारा] उसे इसका पता चल सके। दिखाई देने और [भौतिक] बोध में शरीर की विजय पूर्णतया मसीही व्यज़्ति की अपनी है और उसे आत्ज़ा की सहायता का पता चल जाता है, इसलिए नहीं [वह यह मान सकता है कि] उसके बोझ ... हल्के हो गए हैं, बल्कि इस कारण कि सही करने के उसके प्रयास अब सफल होते हैं जबकि [पहले] वह नाकाम रहता था।[10]

परमेश्वर का बालक[11] यह देखने के लिए कि उसने आत्मा को अपने जीवन को भरने की अनुमति दी है या उसने आत्मा को बुझाया है, अपनी परख कर सकता है। वह परख यह देखना है कि "आत्मा का फल" उसके जीवन में बढ़ रहा है या नहीं: "पर आत्मा का फल प्रेम, आनन्द, मेल, धीरज, कृपा, भलाई, विश्वास, नम्रता, और संयम है।" (गलातियों 5:22, 23)। ये सज़ी गुण हमारे प्रभु में थे, इसलिए जॉर्ज बेली ने इस प्रकार विचार व्यज़्त किया: "प्रियो, आत्ज़ा के वास का अन्तिम उद्देश्य मसीह के व्यज़्तित्व की सुन्दरता और महिमा में लोगों को बनाना है। यदि आप पृथ्वी पर स्वर्गीय फूल चाहते हैं तो उसका कन्द स्वर्ग से आयात करना होगा।"[12] परमेश्वर आत्ज़ा के अनुसार चलने में हमारी सहायता करे ताकि "आत्ज़ा का फल" हमारे जीवनों में दिखाई दे सके!

अन्त में मैं एक चेतावनी देना उचित समझता हूं। कई लोगों के मन में पवित्र आत्ज़ा और उसका काम इतना अधिक भर जाता है कि वे पुत्र के बजाय आत्मा पर अधिक ध्यान देते हैं। निश्चय ही इससे आत्मा शोकित होगा। जब पवित्र आत्मा ने बाइबल को लिखने की प्रेरणा दी तो उसका उद्देश्य अपने आप को प्रकट करना या अपनी महिमा करवाना नहीं था। यीशु ने कहा, "जब वह सहायक आएगा, ... अर्थात सत्य का आत्मा ... तो वह मेरी गवाही देगा।" (यूहन्ना 15:26)। पौलुस ने यह नहीं कहा कि "मैंने पवित्र आत्मा और उसकी सेवकोई के बिना तुममें किसी और बात को न जानने की ठान ली।" बल्कि उसने कहा, "मैं ने यह ठान लिया था, कि तुज़्हारे बीच यीशु मसीह, बरन क्रूस पर चढ़ाए हुए मसीह को छोड़ और किसी बात को न जानूं" (1 कुरिन्थियों 2:2)। इस प्रेरित ने यह नहीं कहा कि "ऐसा न हो, कि मैं और किसी बात का घमण्ड करूं, केवल पवित्र आत्मा के काम पर।" बल्कि उसने कहा, "ऐसा न हो, कि मैं और किसी बात का घमण्ड करूं, केवल हमारे प्रभु यीशु मसीह के क्रूस का" (गलातियों 6:14क)।

आइए हम इस बात को सीखें कि आत्मा और उसके काम का ज़्या कर सकते हैं, परन्तु इस बात को भी न भुलाएं कि आत्मा हमें *यीशु* के पीछे चलने और *परमेश्वर* के निकट लाने में सहायता के लिए दिया गया था।

## सिखाने वालों तथा प्रचारकों के लिए नोट्स

इस प्रवचन का इस्तेमाल करने पर आप अपने सुनने वालों को बताएं कि पवित्र आत्ज़ा ने ''यीशु के पीछे'' *कैसे* चलना बताया है (मज़ी 16:24; यूहन्ना 14:15; मरकुस 16:16; मज़ी 24:13)।

टिप्पणियां

[1]यीशु ने ''एक और सहायक'' कहा ज़्योंकि वह पृथ्वी पर प्रेरितों के साथ रहने के समय उनका सहायक था। [2]इस पुस्तक में पहले आए पाठ ''शरीर बनाम आत्मा (8:5-13)'' में 2:38 पर टिप्पणियों पर विचार करें। [3]इस पुस्तक में पहले आए पाठ ''शरीर बनाम आत्मा (8:5-13)'' में रोमियों 8:9 पर टिप्पणियां देखें। [4]डज़्ल्यू. ई. वाइन, मैरिल, एफ़ अंगर, एण्ड विलियम वाइट, जूनि., *वाइन'स कज़्पलीट एज़्सपोज़िस्टरी डिज़्शनरी ऑफ़ ओल्ड एण्ड न्यू टैस्टामेंट वर्ड्स* (नैशविल्ले: थॉमस नेल्सन पज़्लिशर्स, 1985), 190. [5]ज्योफ्री डज़्ल्यू. ब्रोमिले, *थियोलॉजिकल डिज़्शनरी ऑफ़ द न्यू टैस्टामेंट,* सज़्पा., गरहर्ड किट्टल एण्ड गरहर्ड फ्रैडरिक, अनु. ज्योफ्री डज़्ल्यू. ब्रोमिले, abr. (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पज़्लिशिंग कं., 1985), 80 में जे. बेहम, ''*arrabón.*'' [6]यह विचार ओज़्लाहोमा क्रिश्चियन कॉलेज (अब ओज़्लाहोमा क्रिश्चियन यूनिवर्सिटी) में बाइबल विभाग के प्रमुख रेमंड केलसी का था। जे. डज़्ल्यू. मैज़्गर्वे एण्ड फिलिप वाई. पैंडल्टन, *थस्सलोनियंस, कोरन्थियंस, गलेशियंस एण्ड रोमन्स* (सिनसिनाटी: स्टैंडर्ड पज़्लिशिंग, तिथि नहीं), 359 में इसकी चर्चा की गई है। [7]एच. लियो बोलस, *दि होली स्पिरिट: हिज़ पर्सनेलिटी, नेचर, वर्क्स* (नैशविल्ले: गॉस्पल एडवोकेट कं., 1942), 51-53. [8]रोमियों 8:28 पर चर्चा अगले पाठों में की जाएगी। [9]1 थिस्सलुनीकियों 5:19 एक संदर्भ में है जो ''आश्चर्यकर्म'' तथा ''बिना आश्चर्यकर्म'' दोनों प्रकार की गतिविधि का संकेत देता है। पहली शताज़्दी में किसी में ''आत्मा का असाधारण दान'' हो या ''सामान्य दान'' उस पर ''आत्मा को बुझाना'' लागू नहीं होता था। [10]मैज़्गर्वे एण्ड फिलिप वाई पैंडल्टन, 360.

[11]यहां ''परमेश्वर की सन्तान'' ज़्योंकि किसी अविश्वासी के लिए गलातियों 5:22, 23 में वर्णित गुण होना सज़्ज़ावित है। परन्तु परमेश्वर की सन्तान के लिए कम से कम इन गुणों के विकास की प्रक्रिया में से गुजरने के बिना ''आत्मा से परिपूर्ण होना'' सज़्भव नहीं है। [12]सैंट्रल क्रिश्चियन कॉलेज बर्टलेसविल्ले, ओज़्लाहोमा (अब ओज़्लाहोमा नगर में स्थित ओज़्लाहोमा क्रिश्चियन यूनिवर्सिटी) में दिया गया लैज़्चर, जॉर्ज बेली।